## पद १५९

(राग: यमन जिल्हा - ताल: त्रिताल)

कशी ही मुरली काय वद गे। स्वजनीं विजनीं धननीं मुरली गे।।ध्रु.।। बोधक वचनें अमृतरूपिया। निजश्रवणीं सरली गे।।१।। विसरूनि गेल्यें गृह सुत धंदा। देहस्फूर्ती विरली गे।।२।। माणिक म्हणे प्रभु पाहुनि नयनीं। सर्व आशा पुरली गे।।३।।